

DPN 6281

Title : ब्रह्मोक्त गायत्री हृदय BRAHMOKTA GĀYATRĪ HRDAYA  
गायत्री भुजंग GĀYATRĪ BHUJANGA

Run. No. 6972

Cat. No. 17

Micro. No.

Subject Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 21.5 x 8.7

Folios 51

Lines ( in a page ) 7/8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 1835

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thya<sup>s</sup>saphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□. श्री गायत्र्यै नमः ॥ नारायण उवाच ॥ भगवत्सर्व धर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारंग ॥ श्रुति स्मृति  
पुराणाणां रहस्यं त्वन्मुखोद्धृतम् ॥

P.T.O.



इति श्री ब्रह्मोक्त गायत्री हृदयं समाप्तं ॥ ॥ संवत् १८३५ वैशाख कृ ३० शुक्ल ॥

श्री गरुडेशाय नमः ॥ अथ गायत्री भुजंगः ॥ ॥ उषःकालगम्या मुदार स्वरूपा,  
अकारप्रादेष्टा मुदारांग भूषां ॥ अजेवादि वंशो मजाद्वी गजाभां अनौपम्यरूपां,  
मजाम्बादि सन्ध्या ॥ १ ॥

इति ब्रह्मयामते ब्रह्मानारद संवादे गायत्री भुजंगं सम्पूर्णम् ॥

श्री गरुडेशाय नमः ॥ अथ गायत्री पंजरं निरूप्यते ॥

इति श्रीमद् वसिष्ठ संदितायां चतुर्विंशति सादृशिकायां वसिष्ठ पराशर संवादे  
सावित्री पंजर विभागयो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ॥

इति श्री मंत्रसारे नारद कृष्ण संवादे गायत्र्या स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥

इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे ब्रह्म नारद संवादे श्री गायत्री द्वादशनाम समाप्तं ॥ ॥



श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ प्रह्लादसिंह सादि वं गोपि पुत्रं विनायकं मत्पुत्रं  
 मंडलं मरे निरुद्धं तु का मा भवति ॥ १ ॥  
 नये कथाधि गा चो मा ज नु क रं च सु ह र्ति ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 सु र न व म न ल र जी तु द न म च वि ना य क र ॥ ४ ॥  
 पति त्रे व द द सै हे र मं ग न य क र क र्ति ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 श कृ ष णा नो च ली र्वी त्वा य स प्र प चे र वि ष्णु या र्चि त म



तेविष्वक्पुत्रार्थोऽथ तेविष्वक्पुत्रार्थोऽथ तेविष्वक्पुत्रार्थोऽथ तेविष्वक्पुत्रार्थोऽथ तेविष्वक्पुत्रार्थोऽथ  
तस्य रेभसिर्विचलप्रतेनाहृतमं इति श्रीनारदपुराणे श्रीमहागरुडपर्वणि द्वादश  
नमस्तस्मै ॥



15

10

5

0

5

10

15

20





इतीदं कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशनम् ॥ चतुः शृङ्खला  
विद्याविलसि श्रयसिद्धिदं ॥ जपारम्भे च गायत्र्या जपान्ते क  
वचं पठेत् ॥ स्त्री गोवृक्षवंधाचैव मित्रद्रोहादि पातकार  
मुञ्चते सर्वपापेभ्य परब्रह्माभिगच्छति ॥ ॥ इत्यगस्त्य  
संहितायां ब्रह्मनारदसंवादे गायत्रीकवचं संपूर्णम्



15

10

5

0

5

10

15

20





15

10

5

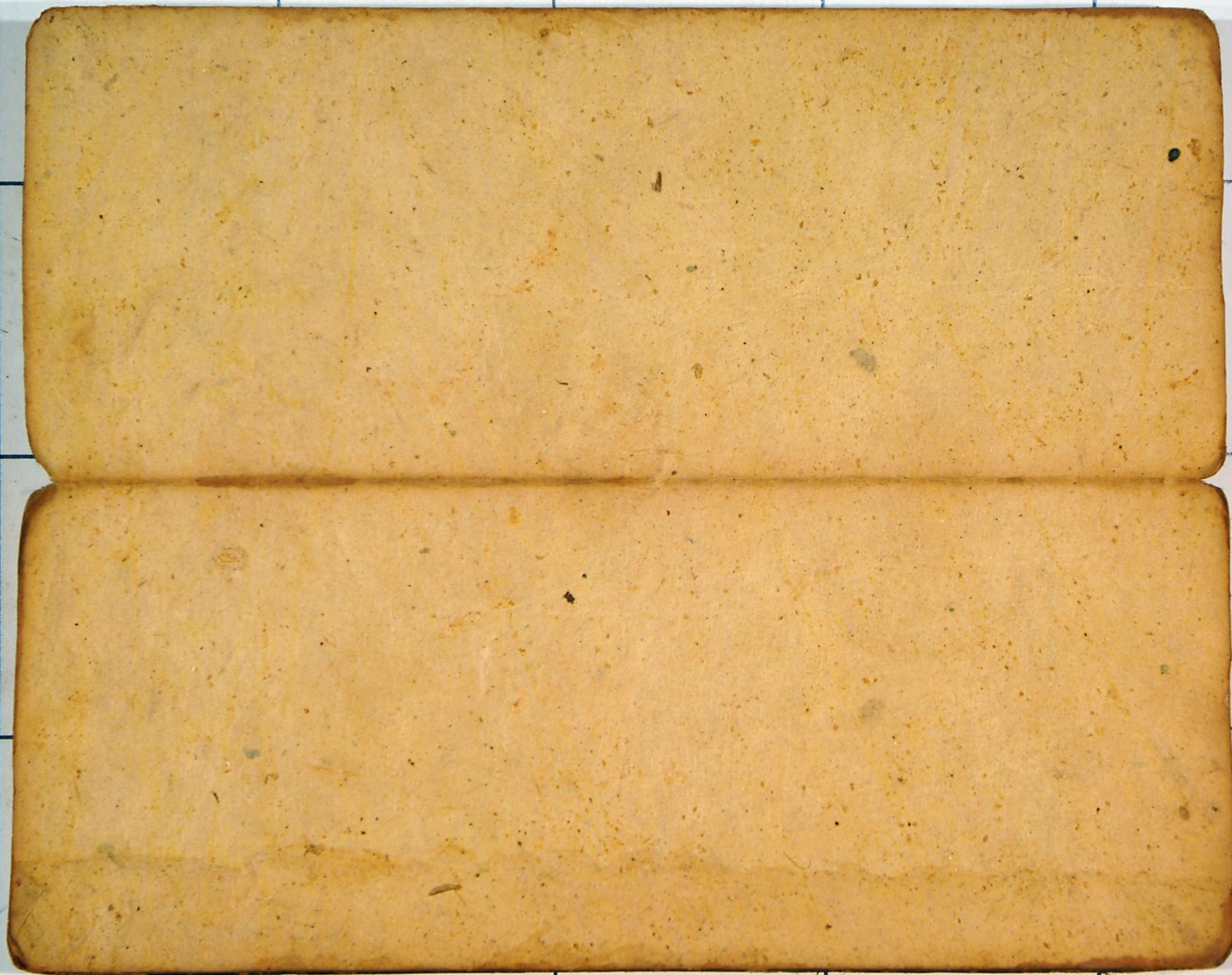
0

5

10

15

20





15

10

5

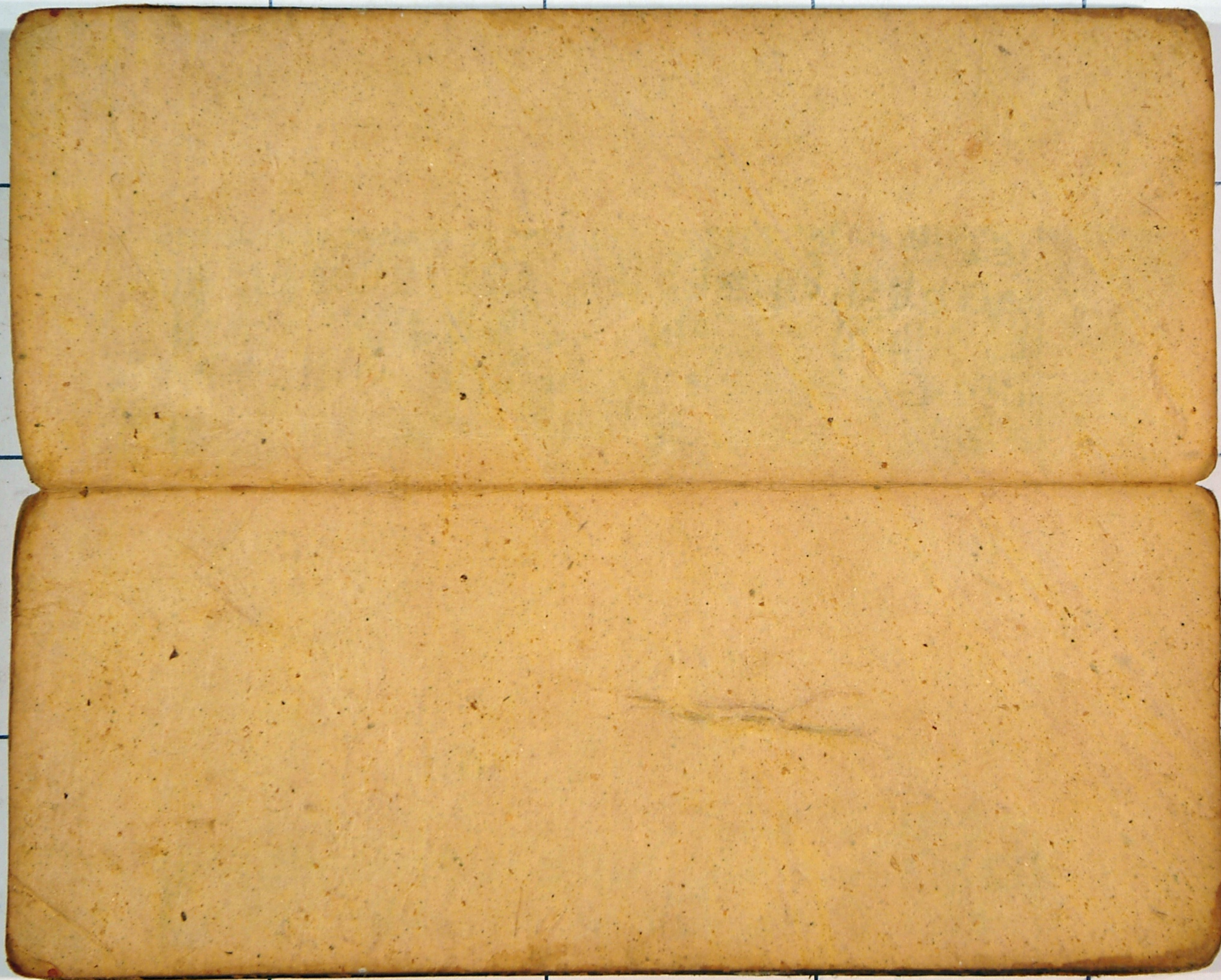
0

5

10

15

20





15

10

5

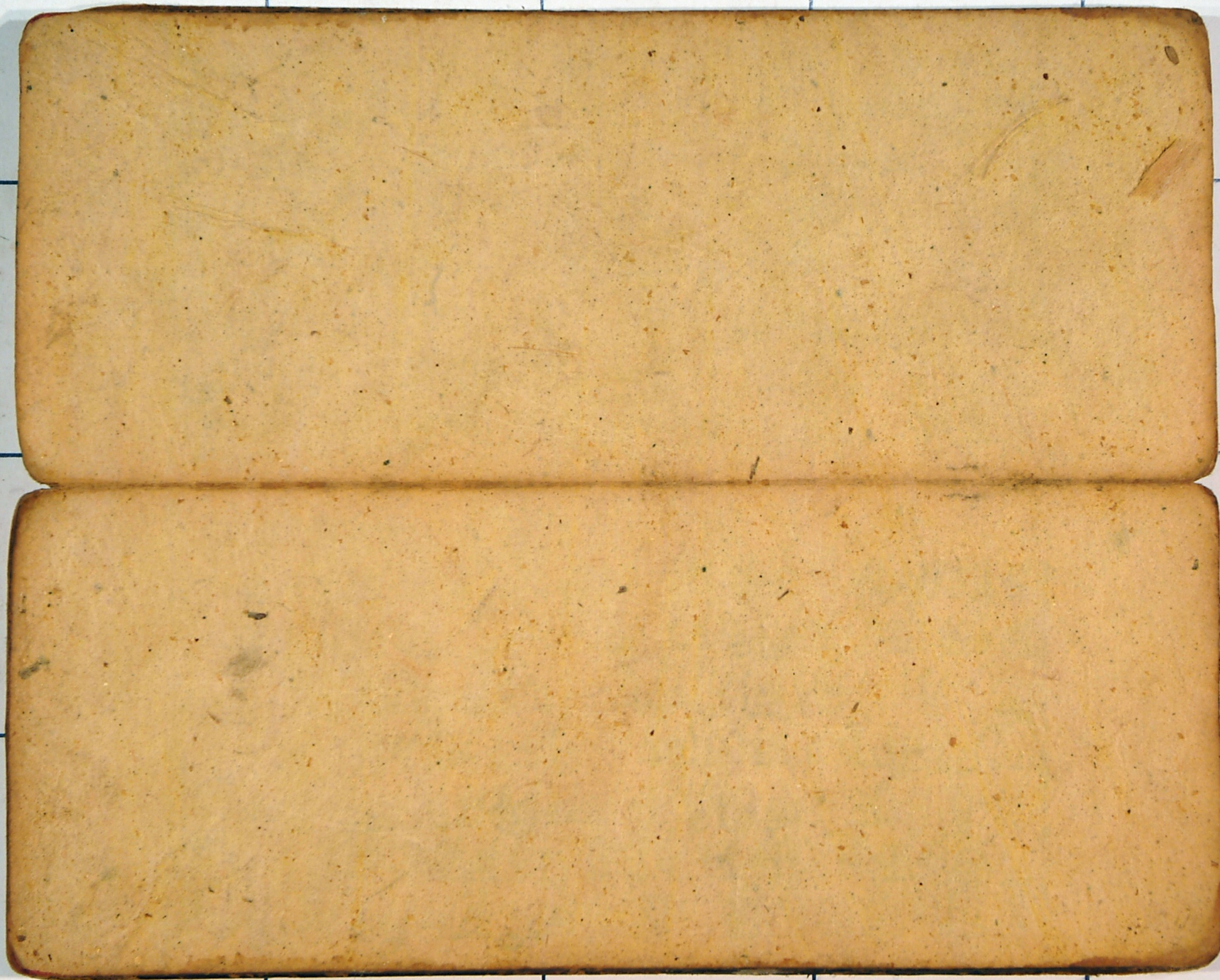
0

5

10

15

20





15

10

5

0

5

10

15

20





15

10

5

0

5

10

15

20



१५  
 १०  
 ५  
 ०

ले ५ नैनादिनी शिखायां पा. पू. ॐ थं ग्रसनी उर्द्धु मिश्रामालायी. ॥ ॐ नृ  
 निवृत्ती पूर्वशिग्रामालायी ० ॐ नृ प्रतिष्ठादक्षिण मिश्रामालायी.  
 ॐ नृ विद्या उरु मिश्रामाला. ॐ नृ मन्त्रि पश्चिम मिश्रामालायी.  
 ॐ नृ चंचामूर्धु उर्द्धु लाचन. ॐ नृ धं प्रियदर्शिनी नृ द्वय. पा. ॥  
 ॐ नृ जं नानायली कर्णविवनथा. ॐ नृ उं भाहिनी दक्षिण कर्णतूषण. ॥  
 ॐ नृ मृगुकुं प्रज्ञा वामकर्ण. ॐ नृ मृगुकुं नाभापूट द्वय. ॥

ॐ नृ वं वज्रिनी वकु. ॐ नृ कं कंकटादक्षु पंक्षु. ॥ ॥  
 ॐ नृ र्वं कालिका उर्द्धु दक्षपंक्षु. ॐ नृ गं गिवा अर्धदक्षपंक्षु  
 ॐ नृ धं धागधाया मूर्खी उर्द्धु. ॐ नृ कं वीना अर्धन. ॥  
 ॐ नृ ॐ माया कि काय. ॐ नृ अं वागीश्वरी वावि.  
 ॐ नृ वं गि विवाहिनी कं (०. ॥ ॐ नृ तं रीषणी दक्षिण वाह्नि त्वन.  
 ॐ नृ यं वायु वग वाम वाह्नि. ॐ नृ उं लामा दक्षिण वाह्नि दक्षु. ॥

५  
 ०



ॐ ठं विनायका वामवाहूः ॥ ॐ ठं पूर्वमाकनतलयाः ॥ ॥ ॥  
 ॐ ङं मंकात्रिणीदककनीगुलिषूः ॥ ॐ ङं इंदुद्विनीवामकनीगुलिषूः ॥  
 ॐ ङं नंभूतिदीपनीभूलदंभुः ॥ ॐ ङं ङं यनीदककनतलः ॥  
 ॐ ङं टं कपालिनीवामकनतलः ॥ ॐ ङं प्रं पावनीहृदि प्रीया ॥  
 ॐ ङं हं अम्बिका प्राञ्जलधाम् ॥ ॐ ङं सैवास्मादकपात्रं ॥  
 ॐ ङं अः ॐ कामकि वामपात्रं ॥ ॐ ङं चं कागलीदकलनं ॥

ॐ ङं लं पूरुता वामस्तनः ॥ ॐ ङं आं आमादीपयादयः ॥ ॥  
 ॐ ङं मं लम्बादनी उदयः ॥ ॐ ङं कं संहानिनीनाहो ॥ ॥  
 ॐ ङं मं महाकालीनिगम्यः ॥ ॐ ङं मं कं ममालिनीगुह्यं ॥  
 ॐ ङं अं मुक्तादवीमुक्ता ॥ ॐ ङं तं तानादवी उर्वी ॥  
 ॐ ङं वं वानमकिदकज्ञान्निः ॥ ॐ ङं उं क्रियामकि वामज्ञान्नि



ॐॐॐ मयतीदक्षजंघायीं ॥ ॐॐॐ सावित्रीवामजंघायीं ॥  
ॐॐॐ दंदहनीदक्षपादः ॐॐॐ हं हं कानिशीवामपादग्रीवा.  
रुद्रा वज्र



15

10

5

0

5

10

15

20





श्रीगायत्रीनमः॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ भगवत्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थपारंग। अतिस्मृ  
तिपुराणानां रस्यंतं मुखोऽमुतम। सर्वपापहरं देवकेन विद्यानिवर्त्तते। केन वा बल  
विज्ञानं किन्तु वामोक्षसाधनं। १। ब्रह्मणो गतिः केन केन वा मृत्युना नमः। ए  
हि का मुष्मिक फलं केन वा पञ्चसंभवं। २। बलुमर्हस्य रेसेरा सर्वं निखिलमादि  
तः। ब्रह्मो वाच ॥ साधुसाधु महाप्राज्ञ सर्वमवयष्टं त्वयानघ। ४। भृगुवक्ष्यामि  
यत्नेन गायमाष्टसहस्रकम्। सृष्ट्या दो विष्णु पूर्व यदुक्तं तद्वीक्षिते। ५। अहो  
नरसहस्रस्य अहमेव ऋषिः स्मृतः। छन्दो गृह्यतथा देवि गायत्री देवता स्मृ



ता। ६। हलोवी। जानितस्यैव स्वरः शक्त्यररिता। अंगत्या संकरं त्यासमु व्यते मा  
तृकाक्षरे। ७। अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितायैव। रत्नश्चेत हिरण्यनी  
लधवला ध्यायेर्गुणै रूपाक्षरै र्मुक्ता। मिन्दुनिवद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णामिका  
। गायत्री कमला सतां करतलैश्चक्रा ज्वरुमा वहं पद्माक्षं ववरस्रजं च दधती।  
हंसा धिरूठां भजे। ८। अर्चितपलक्षणा मूक्ता अर्थमा वा मरेश्वरी। अमृता रवि  
मध्यस्थी अजिता वापरा जिता। ९। अणिमा दिगुणा धारणार्क मंडल संस्थिता  
। अजर अमर वर्द्धी अक्षसूत्र धरा धरा। १०। अकारा दिक्षा कारंता अरिषट्ग

भेदिनी । अंजनादिप्रतीकांश अंजनादिनिवासिनी । ११ । अदितिश्चाजपाविद्या  
अरविंदनिभेक्षणम् । अन्तर्बहिस्स्थिताविद्याध्वंसिनी वांतरामिका । १२ । अजावा  
जमुखा वा सा अरविंदनिभानना । अर्द्धमात्रार्द्धदानन्ता आरिमंडलमर्दिनी ।  
१३ । असुरघ्नी अमावास्या अलक्ष्मघ्नी सृजार्विता । आदिलक्ष्मीश्चादिशक्तिर  
कृतिश्चायतानता । १४ । आदिसंपदवी वा रा आदिसंपदसेविता । आवार्यावर्त  
मावा रा आभ्रमूलनिवासिनी । १५ । आग्नेयी वामरी वाद्या आरुध्यायासतम  
स्थिता । आधारनलयाधार आकाशंतरवर्तिनी । १६ । आद्याक्षरसमायुक्ता



अर्द्धाकाशरूपिणी। आदित्यमंडलगता अक्षमाला विभूषिता ॥१७॥ शंख  
एवमुदाहृत्य इन्द्राक्षरी वरनिभेक्षणा। ऐश्वर्यी इन्द्रपदा इन्द्राक्षी वेन्द्ररूपिणी ॥१८॥ इक्षु  
कोदण्डसंयुक्ता इषुसंधानकारिणी। इंदुनीलसमाकारा एता विंगलरूपिणी ॥  
१९॥ इन्द्राक्षी वैश्वरी देवी ईषणात्रपवर्जिता। उमावोष्मा ह्युदुनिभा उर्वारुकफ  
लाहिनी ॥२०॥ उरुप्रभावोदुमती उडुवा ह्येदुमध्यगा। उर्द्धास्या ह्युर्द्धकेशीव  
उषा ह्योषधवर्जिता ॥२१॥ ऋतुर्वर्द्धा उरुमती ऋषिदेवनमस्तुता। ऋग्वेदा  
ऋणहंवी च ऋषिमंडलधारिणी ॥२२॥ ऋद्धिदा ऋतुमार्गिस्था ऋतुधर्मी ऋ

तुप्रदा। ऋग्वेदनिलया ऋग्वी लुप्तधर्मप्रवर्तिनी ॥२३॥ लतरी वरसंभूता लूना  
दिविषहारिणी। एकाक्षरी त्रिकयाता एकनैकैकनिष्ठिता ॥२४॥ ऐंही ह्ये  
वता रूढा ऐहिका मुष्मिकप्रदा। ओंकारी ह्योषधी ह्योषा ओतः प्रोतनि  
धायनी ॥२५॥ और्वी ह्योषधसंपन्ता औपासनफलप्रदा। अंडमध्याख्यता  
द्वी अंतका सुरघातिनी ॥२६॥ कात्यायनी कालरात्री कामाक्षी कामसुन्दरी।  
कमला कामिनी कान्ता कामदा कलिकर्णिका ॥२७॥ करिष्ठी भक्तनी कन्याकर  
वी रसुवासिनी। कल्याणी कुंडलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥२८॥ कुरुवि



न्दलाकारकुंडलीकुमुदलया। कालजिह्वाकरालास्याकालिकाकाँसूपिण।  
 २०। कसनीयगणकांतिः कलाधारकुठहती। कौशिकीकमलाधारकामवाम  
 वारप्रमंजिनी। २०। कौशिकीकरुणापांगो ककुदंतावलीप्रिया। केशिनीकेशवनु  
 ताकंदकुसुमप्रिया। २१। कालिंदीकालिकाकांचीकलशेद्रवसंस्तुता। काम  
 मताक्रतुमतीकामरूपाक्रियावती। २२। कुमारीकन्दनिलयाकिराताकीरवाह  
 ना। कैकेयीकोकिला। लापाकेतकीकुसुमप्रिया। २३। कमंडलुधराकुराकर्म  
 निर्मलकारिणी। कलहंसगतिः कुआक्षतकौतुकमंगला। २४। कंतुरेतिलको

कमाकरीदुग्मनाकुहुः। कर्पूरलेपनाकलाकपिलाकुहराश्रया। २५। कूरस्था  
 कुधराकुआकुक्षिस्थासिलविस्था। खड्गखेटधराखदीखेचरीखगगाहना। २६।  
 खट्वांगधारिणी। रमाताखगरजोयतिस्थिता। खगध्वीखंडितजराखडाख्याति  
 प्रदायिनी। २७। खंडेदुतिलकागंगागणेशगुहाराजिता। गायत्रीगोमतीगीतागां  
 धारीगानलो लुपा। २८। गीतमीगामिनी। गांधीगांधर्वाक्षरसेविता। गोविन्द  
 वरणात्कानागुणत्रयविभाषिता। २९। गन्धकीगहूरीगोत्रागिरिशगहना  
 गमा। गुहावासागुणवती। गुरुपापप्रणाशिनी। ३०। गुर्वीगुणवती। गुह्यागो



पिकागुरादायनी। गिरिजागीतमातंगीगरुडध्वजवद्वभा। ४१। गर्वपहा  
रिणीजोहजोकुलस्यागदाधरा। जोकर्णनिलयासक्तागुह्यमंडलवर्तिनी।  
४२। धर्मदायनदाघंटाघोरदानवमर्दिनी। दूरिमंत्रत्रयाघोषाघनसंघ  
मुदायिनी। ४३। घंटाखप्रियाघ्राणिघृणिमंतुष्टकारिणी। घातारिमंडल  
धूर्तघतावीधनवेगिनी। ४४। ज्ञातावाहमतीवर्वावर्तिनी। वारुहसिनी।  
वदुलावंडिकावित्रावित्रमोक्षविभूषिता। ४५। वतुर्भुजावाहतावतुरीय  
रिताप्रदा। वूलिकावित्रविश्रांतावन्दाभा। वृणकुंतला। ४६। वंद्रहासावा

हगात्रीवकोरावंडहासिनी। वंद्रिकावक्रधात्री। ववोरभ्योराववंडिका। ४७। वंव  
दाग्वादिनी। वंद्रवृजवोरविनाशिनी। वारुवंदनलितांगी। वंद्रवामरवी। जिता। ४८।  
वाहमध्यावाहगतिश्रुद्रिका। वंद्ररूपिणी। वारुभोगप्रिया। वार्वावरिताव  
क्रधासिनी। ४९। वंद्रमंडलमध्यस्था। वंद्रमंडलदर्पिणी। वक्रवाकसूतनी। वेल  
वित्रावारवितासिनी। ५०। विस्वरूपावन्दुमती। वन्दुभा। वन्दनप्रिया। वौद  
यित्री। विप्रज्ञावातका। धामंहेतुकी। ५१। ध्वजणीता। ध्वजधरा। ध्यायाध्वप  
रिदिहा। ध्यायादेवी। ध्वजवर्षी। ध्वनेन्द्रियविसर्पिणी। ५२। ध्वन्दोऽनुदु



प्रतिष्ठावर्द्धिदोपद्वयेदिनी। स्त्रोदास्त्रेश्वरी। स्त्रोदाधूरिकास्त्रेश्वरी।  
५३। जननी। जनमरहिता। जातवेद। जगन्मयी। जाह्नवी। जटिला। जेनी। जगन्मर  
णवर्द्धिता। ५४। जंबुद्वीपवती। जोहना। जयन्ती। जयशालिनी। जितेंद्रिया। जि  
तक्रोधा। जितामित्र। जगन्प्रिया। ५५। जातप्रेमयी। जिह्वा। जानकी। जगती। ज  
र। जनित्री। जह्नुतनया। जया। जयाहते। शिखा। ५६। ज्वाला। मुखी। जयवती। ज्वल  
न्ती। जितविष्णु। जिह्वा। कान्तमहज्वाला। जायती। जलदेवता। ५७। ज्वलन्ती। ज्व  
लवा। ज्येष्ठा। जाघोषा। स्त्रोदा। दक्षिणुरवा। जंभिरा। जंभिरा। जंभा। ज्वलन्ती। माणि

क्यकुंडला। ५८। ~~जिह्वा। कान्तमहज्वाला। जायती। जलदेवता। ५७। ज्वलन्ती। ज्व~~  
लिका। मर्या। निघोषा। मा। मा। सतवेगिनी। निहन्त्री। वाद्यकुशला। मुख  
पादध्वजा। ५९। टंका। वा। रा। स। मा। युक्ता। टंकिणी। टंकवेगिनी। टंकी। क  
तगुणा। शेषा। टंकानि। र्यम। हो। रणा। ६०। टंकारुका। रिणी। देवी। ठठश। द्वातिना  
दिनी। डाकिणी। डामरी। डिंभा। डुंभा। नैकवर्द्धिता। ६१। डामरी। तंत्रमा। रंस्या  
डमडुमरुवा। दिनी। डिंरी। रविहसा। डिंभा। डेल। की। डयरा। य। रणा। ६२। डुंठि। वि  
घ्नेश। जननी। ठका। हस्ता। ठिलि। प्रिया। ६३। प्रिया। शायते। शेषा। न। रणा। तरुणा।



त्रयी ॥ ६३ ॥ त्रिगुण त्रिपथा तंत्री तुलसी तुंगा सता ॥ त्रिविक्रम पदाक्रांता तुरीय  
पदगामिनी ॥ ६४ ॥ तस्यै दिव्य संकाशा तामसी तुहिना श्रया ॥ त्रिकालज्ञान  
संपन्ना त्रिवालि त्रिविलोचना ॥ ६५ ॥ त्रिशक्तिस्त्रिपुर तुंगा तुरंगवदना तट ॥  
तिमिर्गल गिलाती वा त्रिश्रोता तामसा दिनी ॥ ६६ ॥ तन्त्रातंग विशेषज्ञा तनुमध्या  
त्रिविष्टपा ॥ त्रिसंध्या अस्तनी तोषा तास्थिता पप्रपातिनी ॥ ६७ ॥ ताटंकि रण  
तुषाणभा तुहिना वलनवा सिनी ॥ तै तुजाल ससा युक्ता तारहारवलि प्रिया ॥  
विलहोम प्रिया तीर्था तमालकुसुमा कानि ॥ तारका त्रिपुर तन्वी त्रिशंकु पारि

वारिता ॥ ६८ ॥ तलोदरी तिरिभासा ताटंको पारिणो भिता ॥ त्रिजटा तैजस तृत्या त्रिवि  
धा तस्यै कानि ॥ ७० ॥ तप्तकां वन संकाशा तप्तकां वन भूषणा ॥ त्रियं वक्र त्रि  
वर्णा वक्रिका लक्ष्मणा नदायिनी ॥ ७१ ॥ तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुंबुरुस्तुता ॥  
तार्क्ष्ण्या त्रिगुणा धारा त्रैभंगितनु वदन्तरी ॥ ७२ ॥ तकार तारिणी चांता दोहि  
नी दीनवत्सला ॥ दानकां तकरि दुर्गा दुर्गा सुरा नवहिणी ॥ ७३ ॥ देवकी देवता मा  
ता द्वोपदी दुन्दुभि स्वना ॥ देव्या नदुरवा सा दक्षिद्वेदिनी दिवा ॥ ७४ ॥ दामोद  
र प्रिया दीप्ता दंडिनी देवश्रजिता ॥ दंडकारण्य निलया देवता दिव्यरूपिणी ॥ ७५ ॥



देववंद्यादिविषदाद्वेषणीदातवाकृतिः। ६। नानाथस्तुतादीक्षादिग्वासादेवमो  
हिनी। ७५। धात्रीधनुर्द्वैधेनुर्धरणीधर्मशारिणी। धुरंधरधराधारधनदा  
धाम्यदोहिनी। ७७। धर्महीलाधनाध्यक्षाधनुर्वेदविशारदा। धृतिधन्याधृति  
पदाधर्मशक्तिप्रियाधृता। ७८। धूमावतीधूमकेशीधर्मरात्रप्रवर्तिनी। नन्दा  
नन्दप्रियानित्यानुत्ततानन्दनामिका। ७९। नर्मदानलिनीनीलातीलकंठस  
माश्रया। नारायणप्रियानित्यानिर्गुणातिर्मलानिधिः। ८०। निराधारानि  
हयमानित्यशुद्धनिरंजना। नादविन्दुकलातीतानादविन्दुकलामिका। ८१

नारसिंहीनगधरनृवाराणागभूषणा। नरकक्लेशशमनीनारायणपदोद्भवा। ८२  
निखद्यानिशकाशनादप्रियकारिणी। नानाभोतिष्यदाख्यातानिर्दधदानिर्म  
लामिका। ८३। नवस्रधरनीतितिरूपद्रवकारिणी। नन्दजानवरत्नाद्यानैमि  
षारण्यवासिनी। ८४। नवनीतप्रियानारीनीलजीह्वानिःस्वना। निमेषानिन  
दास्त्यानीलातीवानिरीश्वरी। ८५। नानावह्निनसंभयनीमागलोकनिवा  
सिनी। नवजांबूनदप्रख्यातागलोकाधिदेवता। ८६। नूपुरकांतवरणनर  
विजयप्रमोदिनी। निमग्नारक्तनयनानिर्घातासमनिःस्वना। ८७। नन्दनी



घातनिलया निर्वृहो परिवारिणी । पार्वती परमा मोक्षपंचवक्त्रात्मिका पर  
पंचकोशविनिर्मुक्ता पंचपातकनाशिनी । पञ्चतानिधानज्ञा पञ्चिका पंचरूपि  
णी । ८८ । पूरिमापासाप्रीतिः परतेजो पकर्विणी । पुराणी पौरुषा उच्यन्ते  
उरीकनिमेषुराणां ८९ । पातालतलनिर्मिता प्रीताप्रीतिविबुद्धिनी । पादनी  
पदनी हारापेशला वाकशाला सती । ९० । प्रजापतिपरिष्ठांता पर्वतस्तनमंडला ।  
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसंभवा । ९१ । पद्मपात्रा पद्मपदा पद्मि  
नी प्रियभाषिणी । पञ्चापाशविनिर्मुक्ता पञ्चप्री पुराणसती । ९२ । पतिव्रता

पवित्रांगी पुष्पका सपराधरा । पुष्कला पुरुषा पर्व पारिजातसमप्रिया । ९३ ।  
प्रज्ञावती सुता पौत्रा पञ्चरता पद्मास्वनी । पट्टिपाशधरपञ्चनी पितृलोकप्रदा  
यिनी । ९४ । पुराणी पुराणशीला वप्रणतानि विनाशिनी । प्रद्युम्नजननी प्रीता  
पितामहपरिग्रहा ९५ । पुंडरीकपुरावासा पुंडरीकनिभातना । पृथुजंघा पृथु  
भुजा पृथुपाद पृथुदरी । ९६ । प्रवालशोभा पिंगाक्षी पीतवासा पिलप्यि  
ला । प्रसवाग्रहिदा पुराणा वितस्ता मरणावागतिः । ९७ । पंचवर्णा पंचवाणा पं  
विका पञ्जरस्थिता । परमा मापरा ज्योतिः पराप्तीतिः परागतिः । ९८ । परका



धापदेशानिपावने पावकद्युतिः ॥ पुष्पवासपरशैद्यापुष्पवासदृष्टदृष्ट  
 १००१ पीतांगीपीतवसनापीतशयापिताकिनी ॥ पितृक्रियापिशवघ्नीपा  
 दलाक्षीपशुक्रिया ॥ १००२ पंचभक्षप्रियापारशतनापादखातिनी ॥ पुलागवन  
 मध्यस्थापुण्यतीर्थनिवेदिता ॥ १००३ पंचगंगापरशक्तिः परमाह्लादकारि  
 णी ॥ पुष्पकाग्रस्थितापूषापोषिताखिलाविष्णुपा ॥ १००४ पातप्रियोपंचशि  
 खापल्लगोपरिशायिनी ॥ पंचसामात्मिकापृथ्वीपावकीपृथुदोहिनी ॥ १००५  
 पुराणंन्यायमीमांसापादलापुष्पगन्धिनी ॥ पूर्णप्रजापरशैकाप्रणवादेव

गोवर ॥ १००५ प्रवालशेभाशूर्लांशाप्रणवापद्वन्वाधरी ॥ फलिनाफलनाफलुफू  
 लारीफलकाक्षतिः ॥ १००६ फलींद्रभोगशयनाफणिमंडलमंडिता ॥ बालाबाला  
 बहुनुताबालातपनिभांशुका ॥ १००७ बलभद्रप्रियाबहुवडवावुद्धिसंस्तुता ॥ बदि  
 देवीबलिमतीबालिशर्त्रीबलिप्रिया ॥ १००८ बाम्बावीबोधितावुद्धिवंधवकु  
 सुमाक्षतिः ॥ बालमानुषभाकारब्राह्मीब्राह्मणदेवता ॥ १००९ बृहस्पतिनता  
 बृन्दाबृन्दावनविहारिणी ॥ बलाकिनीविषाहाराविलवासावहृतका ॥ १०१० व  
 हुनेत्रावहुपदोर्वकावहुप्रिया ॥ बहुबाहुयुतावीक्रारूपिणीबन्धुरूपिणी ॥ १०११



विन्दुनादकलातीताविन्दुनादस्वरूपिणी। वङ्गगोधांगुलित्राणावदय्यश्रि  
मवासिनी। १२१। वन्दारकादृहस्कन्धादृहतीबीजपातिनी। वन्दार्धधावहु  
सुतावहुजावहुविक्रमा। १२२। वङ्गपदासनासीनाविल्वदृष्टतलास्थिता।  
वोधिदुमनिजावासाविन्दुस्थविन्दुदर्पणा। १२३। वारणावाणासनवतीवडवा  
तलवेगिनी। वल्गाडवहिरंतःस्थावल्गुकंकणशेभिनी। १२४। भवानीभूष  
णवतीभीषिणीभयवारिणी। भद्रकालीभुजंगाक्षीभारतीभारताश्रया। १२५।  
भैरवीभुवनाकारभूरिदामगमालिनी। धामिणीभोगनिरताभद्रदाम्

रिविक्रमा। १२६। भूतवासाभृगुसुताभार्गवीभूसुरावर्ता। भागीरथीभोगवती  
भवनाशिभियग्वरा। १२७। धामिणीभोगिनीभाषाभाषिणीभृदक्षिणा।  
भगालिकाभीमरथीभववन्धनमोयिनी। १२८। भुजनीयाभूतधात्रीभक्तिता  
भुवनेश्वरी। भुजंगबलयाभीमामेसंडभागधोहिनी। १२९। मातामयीमधुम  
तीमधुजिह्वामधुप्रिया। माध्वीदेवीमहाभागमानिनीमीनलोचना।  
१३०। मायामयीमखवतीमधुमांसमधुद्रवा। मानिनीमधुसंभृतामि  
लापुरशासिनी। १३१। मधुकैटभसंहंत्रीमानिनीमेघमालिनी॥



हरीमहामायामैथिलीमुरसासिनी॥<sup>१२३</sup>महालक्ष्मीमहाकालीमहाकन्याम  
हेश्वरी॥<sup>१२४</sup>माहेर्द्विमेरुतनयामंदारकुभुमार्विता॥<sup>१२५</sup>मंजुमंजीरचरणा  
मोक्षदा मंजुभाषिणी॥ मधुरद्राविरागिमुद्रामत्तमातंगगामिनी॥<sup>१२६</sup>मिधा  
मरुतकरयामाभागधामेनकात्मजा॥ महामारीमहावीरमहोग्रास्याम  
नुस्तुता॥<sup>१२७</sup>मातृकांतिमिरभासा मुकुंदपदविक्रमा॥ मूलाधारस्थि  
तामुग्धामालिपूरकवासिनी॥<sup>१२८</sup>मृगाक्षीमहिषारूढामहिषासुरम  
र्दिनी॥ योगासनायोगगम्यायोगायौवनकाश्रया॥<sup>१२९</sup>यौवनीयोगम

धस्यापमुपगधारिणी॥ यक्षिणीयोगपर्याप्तायक्षराजप्रसूतिनी॥<sup>१३०</sup>  
यातायानविधानज्ञायदुवंशसमुद्रवायकाशदिहकाशंतायाजुषीवनमा  
लिनी॥<sup>१३१</sup>यामिनीयोगनिरतायानुधानभयंकरी॥ रुक्मिणीरमणीरामा  
रेवतीरेणुकाकृतिः॥<sup>१३२</sup>रोद्रीरुद्रप्रियारकाराममातरतिप्रिया॥ रोहिणी  
राज्यदारीहाशमारुजीवलौचना॥<sup>१३३</sup>रागिणीरूपसंपन्तारत्नसिंहास  
नस्थिता॥ रक्तमातृकावरधरारक्तगंधानुलेपना॥<sup>१३४</sup>राजहंससमारूढा  
रंभाशुक्लावलिप्रिया॥ रमणीयगुणाधारांजिताखिलभूषणा॥<sup>१३५</sup>  
रमपरिधानारंजितारत्नमालिका॥ रागिणीरोगशमनीराविरागिरेम



ॐ वृथा भवेत् इति मुश न जानाति तज्जपं निष्कलं भवेत् ॥ डी पूर्वसंघात  
वत्सा विलुत्तलता देरुश्च श्वन्दा दित्यौ करणयोः शुक्रहस्वती नाशिके वा सुदे  
वत्ये दतोष्ठा वुभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ॥ ग्रीवा वसाध्या बुद्धिस्तनयोर्व  
सर्वा वाहोर्मस्त ॥ हृदयं यज्जन्म माकाशं मुदरं नाभिरंतरिक्षं जघनं प्राजापत्यं क  
ठिरिंशती केला वामलया वुरूविश्वे देवा जानुभ्यां जान्वाः ॥ कुशिकौ जंघयोरपमह  
योः खुरः पितरः पादौ च पञ्चावनस्य न्योऽग्न्यो लोमानि नखानि भवंति मूहर्त्ता  
स्तेऽपि ग्राहः केतुर्मासाः तवः संध्या कालत्रयमाह्वानं संवत्सरे निमिषमहो



सत्रमादित्यसुन्दरः सहस्रपादमादेवीशतमध्यां दशं यशः ॥ सहस्रनेत्रादेवी  
गायत्रीशरणमहंप्रपद्ये ॥ उतसंवितुवदायनमः ॥ तत्पूर्वजवायनमः ॥ उतत्यातश  
दित्यापविषायनुमः ॥ सायमधीयानोदिवसकृतं पापं नाशयति ॥ प्रातरधीया  
नो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥ सायंप्रातरधीयानः पापाः क्षमा भवति ॥ यद्दृग्गाय  
त्रीहृदयं ब्रह्मणाः प्रतयः पठेत् च त्वारेवेदाश्चाधीता भवति ॥ सर्वपुत्रीयेषु स्ना  
तो भवति ॥ सर्वदेवैर्ज्ञातो भवति ॥ अभक्षमशरणं तूतो भवति ॥ अभोजन  
तूतो भवति ॥ अपेययाना तूतो भवति ॥ ब्रह्महत्यायाः तूतो भवति ॥ सुवर्णसेवा

अक्षौ ब्राह्मणास न्यद्राहयेत् ॥ अर्थसिद्धिर्भवति ॥

तूतो भवति ॥ सुरपाना तूतो भवति ॥ पतितसंभायना तूतो भवति ॥ अब्रह्मचार  
ब्रह्मचारी भवति ॥ अनेन हृदये नाधीते क्रतुशतेनेष्टं भवति ॥ षष्ठिसहस्रोत्तरलक्ष  
गायत्र्या जप्यमानायाः फलावाप्तिर्भवति ॥ यद्दृग्निम्नमधीयानो ब्राह्मणाः प्रय  
तः श्विः सर्वपापैः पुमुच्येत ब्रह्मलोके महीयत इत्याह भगवान् याज्ञवल्क्यः ॥ गा  
यत्रीहृदयं सम्यग्ये पठंति हि जातयः ॥ ब्रह्मलोकं प्रयच्छंति ब्रह्मणा सह मोदते ॥  
इति श्रीब्रह्मोक्त गायत्री हृदयं समाप्तं ॥ ॥ सम्वत् १८३५ वैशाख ३० अर्ध



॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः अथ गायत्री भुजंगः ॥ ॥ उषः कालगम्या मुदार स्वरूपा  
अकारपुदिष्ठा मुदारां भूषा ॥ अजेषादि वंद्यो मजाब्दी गजाभां अनौपम्यरू  
पां भजान्यादिसंध्या ॥ १ ॥ सदाहं सयानं स्फुरद्गुक्तवस्त्रावराभीतिहस्तां म  
गान्नायरूपा ॥ स्फुरत्स्वधिकामक्षमालां चकुंभादयनामहं भावयेत्पूर्वसं  
ध्या ॥ २ ॥ प्रबालपुतिष्ठांगभूषो ज्वलांतं किरीटोत्तमसदृशराजपुभांतं ॥ वि  
शालोरुभासां कुशाश्लेषहारां भजे बालकां बहुविद्याविनोदां ॥ ३ ॥ स्फुरच्च  
तुकांतं शरच्चंद्रवक्त्रां महाचंद्रकांतं त्रिपीनस्तनाद्यां ॥ त्रिमल्लाक्ष्मालां

त्रिनेत्रस्यपत्नी वषारूढपादां भजे मध्यसंध्या ॥ ४ ॥ षडाधाररूपां षडाध  
रगम्यां षडध्वानयुधायुर्वेदरूपां ॥ हिमदिः सुतां कुदयंतावभासां म  
हेशर्द्धदेहां भजे मध्यसंध्या ॥ ५ ॥ सुषुम्नांतरस्यां सुधासेवमानोडकारां  
तरस्यां द्वितीयस्वरूपा ॥ सहस्राक्षरश्मिपुभासं त्रिनेत्रं सदा यौवनाद्यां  
भजे मध्यसंध्या ॥ ६ ॥ सदा सामगान् प्रिया श्यामलांगी मकारांतरस्यां केश  
वासिचक्रां ॥ गदापद्महस्तां धनुष्या च जन्यां खगेशोपविष्टां भजे तुष्य  
संध्या ॥ ७ ॥ प्रगल्भस्वरूपा स्फुरत्ककराद्यां महालंबमाना सानुपां



तहसो॥महानीलरत्नप्रभाकुंडलाद्यास्फुरदुश्मिवक्रांभजेत्तूर्यसंध्यां  
सदातत्त्वमस्यदिवौघैकगंत्यांमहानोक्षमौर्गिकपाथेयरूपं॥८॥महा  
सिद्धविद्याधरैसेवमानांभजेद्भवेत्तारुणीतूर्यसंध्यां॥हृदामोज  
मध्येपरान्नायमीनेसुखासीनसदाजहंसांमनोत्ता॥सदावामरूपात्रयी  
विद्यभाजांभजावस्तुवामोवदामःपुदामः॥सदातत्त्वैस्त्रयमानांस्त्रिविं  
वरेरायंमहागर्भरूपात्रिनेत्रा॥९॥सदादेवदेवदिदेवस्यपद्मिनीमुमा  
तन्महीत्पादिपादेकजुष्टा॥अनाद्यंदुश्चारयुक्तशठमंडारुस्यलवु  
द्धिदयाधर्महीनं॥१०॥त्रिसंध्याजपध्यानहीनंमहेशिपुसंजीवया

सुप्रसीदत्वमेवाइतीदंभुजंगंपठेद्यस्तुमत्स्यसदाधारचित्तसदा  
श्रीभवानी॥११॥त्रिसंध्यास्वरूपात्रिलोकैकगतांस्समुक्तांभवेत्सर्व  
पापैरजश्वं॥१२॥तिबुद्धयामलेबुद्धानारदसंवादगायत्रीभुजं  
गंसंप्राप्ति॥॥



श्रीगणेशायनमः॥ अथ गायत्री पंजरं लिख्यते॥ अगवतं  
देवदेवं ब्रह्मास्य परमं हिनं॥ विधातारं विष्णुं तं पश्यो न  
प्रजापतिं॥ १॥ शुद्धस्फटिकसंकाशो महेश्वरः॥ शरच्चर  
विद्युत्पिंगजटाजूटस्तु डित्कं केशवुंडलः॥ २॥ शरच्चर  
भवदनः शरदिंदीवरक्षयः॥ हिरण्यो विरूपाहे उपवी  
ता जिनावृतः॥ ३॥ मेतिकाभारुवल्लभः॥ लयसमन्वी  
ताः॥ कपूरोः॥ कृतः॥ स्मृतः॥ यद्वदः॥ ४॥ विनयेना  
पसंगम्य शिरसा प्रणिपत्य नमस्कृत्य देव

विगणमध्यगः॥ पा॥ नारद उवाच॥ अथ देवदेव शस  
र्वश करुणामिधे॥ आत्मि मियत्वेन मया मोक्षकसाधनं  
॥ ६॥ ऐश्वर्यादिसमं सात्त्विकं दद्वैतवर्जितं॥ ब्रह्महत्यादि  
पापघ्नं कामाद्यरिभयापहं॥ ७॥ यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरं  
जनमनामयं॥ यत्ते प्रियतरं लोकैतन्मब्रूहि पितामह॥ ८॥  
ब्रह्मा वाच॥ शृणु नारद वक्ष्यामि ब्रह्ममूलं सेनातनं॥ सृष्ट्या  
होमन्तुरेवात्सितं देवदेवन विसृजना॥ ९॥ प्रपंचबीजमित्याहुरु  
त्पत्तिस्थितिहेतुकं॥ पुरा मया च कथितं काश्यपाय च धीमते॥ १०॥



सा वित्रीपंजरं नाम हरस्य निगमत्रये ॥ अष्टादिकंच हिम  
र्णसंगावरणकं क्रमात् ॥ ११ ॥ वाहनायुधमंत्रास्त्रमूर्तिध्या  
नपुरःसरं ॥ स्तोत्रं च ते हं वक्ष्यामि त्वयि स्नेहाच्च नारद ॥ १२ ॥ ब्र  
ह्मनिष्ठा यदेयस्यान्नदेयं यस्य कस्यचित् ॥ आचम्य नियमः प  
श्चादात्मध्यानपुरःसरं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं मित्यादौ विचिं प्राथम्यो  
महेमाब्जसंस्थितं ॥ धर्मकंदगतज्ञाननालेश्वर्यसमन्वितं  
॥ १४ ॥ वैराग्यकर्णिकासीनां मोंकारगृहमध्यगां ॥ ब्रह्मवेदी स  
मायुक्तां चैतन्यपुरमध्यगां ॥ १५ ॥ तत्त्वहंससमाकीर्णं शब्द

वसमास्थितं ॥ निर्विकल्पतरोर्मूले नित्यसिंहासने स्थितं ॥  
१६ ॥ नादबिंदुकलातीतांगोपुरैरपिशोभितं ॥ नित्यानित्या  
मृतत्वाद्विप्रकोरैरभिसंवृतं ॥ १७ ॥ सांद्रानंदसुधासिंधो नि  
गमद्वीपमध्यगां ॥ ध्यानधारणयोगादितृणगुल्मकतावृ  
तं ॥ १८ ॥ निर्गलार्गलसंचिन्ना गुणद्वारकपाटकां ॥ चतुर्व  
र्गफलोपेतं नित्यकर्मवनेर्युतं ॥ १९ ॥ सदसच्चित्स्वरूपा  
ख्यामृगपक्षिसमाकुलं ॥ विद्याविद्याविचारत्वालोकालो  
काचरावृतं ॥ २० ॥ अविकारसमाश्लिष्टनिराध्यासग



15  
10  
एणावृतां॥पंचिकरणपंचोत्थाभूततत्त्वनिषेवितं॥२१॥  
वेदोपनिषदर्थारण्यो देवर्षिगणमध्यगं॥इतिहासग्रहग  
णैःसदा रैरभिवेदितं॥२२॥गाथापुसरोनिर्यस्यैश्वर्यसंहि  
तागमकिन्नरैः॥नाराशंसपुराणारण्यकिंपुर्षैःकल्पचार  
णैः॥२३॥कृतगानविनोदादिकथात्तापनतपरां॥तदि  
त्यवाङ्मनोगम्यातेजोरूपधरां शिवां॥२४॥जगतःप्रसवि  
त्रीतांसवितुःसृष्टिकारिणी॥वरेण्यामाश्रयणीयांपुरुषा  
र्थफलप्रदा॥२५॥अविद्यावरणान्मुक्तांतेजोय र्गसंज्ञ

कां॥देवस्यसच्चिदानंदपरब्रह्मरसामिकां॥२६॥धीम  
त्यहंसरेवेत्यअद्वैतब्रह्मसमितां॥धियोयत्सवितानःप्रचो  
दयात्तमुपासितां॥२७॥परौसौसवितासाक्षादेवैर्निर्हरण  
यवै॥रजसीत्यतइत्याभ्यांयावदोकारवैश्वर्यं॥२८॥आपो  
ज्योतिरितिद्वाभ्यांपाचभौतिकसंज्ञकां॥रसोमृतंब्रह्मपदै  
स्तांनित्याव्यापिनीपरां॥२९॥भूर्भुवःसुवरित्यैतेनिर्गमत्वं  
प्रकाशितां॥महर्जनस्तपसत्यैर्लोकानामुपलक्षितां॥३०॥  
तादृशीसविताद्रूपरहस्यंतेवदाम्यहं॥॥ब्रह्मोवाच॥

5  
10  
15  
20



व्योमके शोशालकासद्युकीरीटेनराजितां ॥३१॥ मैद्यभु  
कुटिलाकांतविधिविष्णुशिवाननां ॥ गुरुभार्गवकराणां  
तसोमसूर्याग्निलोचनां ॥३२॥ इडापिंगलसुषु एमारव्या  
वायुनासापुटान्विता ॥ संध्याद्विजाष्टपुटितलसद्वागु  
पजिहिकां ॥३३॥ संध्यासौर्यमणिग्रीवमरुद्वाहुसम  
न्वितां ॥ पर्जन्यहृदयासतां वस्वारव्यस्तनमंडलां ॥३४॥  
आकाशोदरविस्त्रस्तनाभ्यावांतरदेशिकां ॥ प्रजापत्याख्य  
जघनां कटीहाणीतिसहितां ॥३५॥ उरूमलयमरुभ्यां

शोभमानां सरिद्वयो ॥ सुजातुजनुकुशिकं वैश्वदेवास्य  
संज्ञिकां ॥३६॥ अथ नद्वयजंघाढ्यां कुरारव्यापिरुसंज्ञि  
कां ॥ अहोरात्रार्द्धमासाभ्यां सूर्यचन्द्रमसामिकां ॥३७॥  
पादां द्विनखलोमारव्यभूतगुडुमलोद्धितां ॥ ग्रहरोडू  
क्षदेवर्षिभूर्तिवयवसहितां ॥३८॥ तिथिमासर्तुपक्षारव्य  
सकेतुर्निमिषामिकां ॥ मायाकल्पितवैचित्रीसंध्याद्याद  
नसंवृतां ॥३९॥ ज्वलकालानलप्रख्यातडित्कोटिसमप्र  
भां ॥ कोटिस्तूर्यप्रतिकाशं शशिकोटिसुशीतलां ॥४०॥



दमा

सुधामंडलमध्यस्थांसां दानं दामतामि कां ॥ वागतीतां मनो  
रम्यां वरदावैतरं ॥ ४१ ॥ चराचरमयी नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्वि  
ता ॥ ध्यात्वा स्वात्मविभेदेन ब्रह्मन्यं जरमारभेत ॥ ४२ ॥ पंज  
रस्य कृषिः सोहं हं हो विह्वलिरुच्यते ॥ देवताचपरोहंसः प  
रब्रह्माधिदेवता ॥ ४३ ॥ प्रणवो बीजशक्तिः स्यादंकीलक  
मुदाहृतं ॥ तत्त्वं तु धीमहीक्षेवं धीयो स्त्रियात्परं पदं ॥ ४४ ॥ मं  
त्रमापो ज्योतिरिति यो निहंसस्तु मे हकं ॥ नृषद्वर्णमृतं ध्या  
ने कवचं व्यापकं मुने ॥ ४५ ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थं विनियोग

इतीरिताः ॥ षडंगदेवतामत्रैरंगन्यासं समाचरेत् ॥ ४६ ॥  
विधामूलेन मंत्रेण व्यापयेत्सु समाहितः ॥ पूर्वोक्तदेवतां ध्या  
येत्साकारगुणसंयुतां ॥ ४७ ॥ पंचवक्त्रां दशभुजां त्रिपंचनय  
नैर्युतां ॥ मुक्ताविद्रुमसौवर्णसिता नीलशुभाननां ॥ ४८ ॥ वा  
णी परारमाया अनेन गवदनैर्युतां ॥ षडंगदेवतामंत्ररूपाश्च  
वयवात्मिकां ॥ ४९ ॥ मृगैर्द्रव्यपक्षीर्द्रुमगहंसासनस्थितां ॥  
अर्द्धदुबद्धमुकुटकिरीटमणिकुंडलां ॥ ५० ॥ रत्नताटंकमां  
गल्यहारग्रेवयनूपुरां ॥ अंगुलीयककेयुरकटकाद्यैरलं



कृतां ॥५१॥ दिव्यस्रग्वस्त्रसं छिन्नोर विमंडलमध्यगां ॥ वर  
भयाज्जयुगलांशं खचक्रपाशां कुशां ॥५२॥ शूलं कपालं स  
गुणं वहंती मक्षरात्मिकां ॥ गायत्री वरदा देवी सो वित्री वेदमा  
तरं ॥५३॥ आदित्यपथगामिन्यां परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ विशि  
ष्टमंत्रजननी स्मरेद्दिशां सरस्वती ॥५४॥ त्रिपदां क्रम्यं  
पूर्वमुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिकां ॥ चतुर्विंशतितत्वाद्या पातु प्राचीं  
दिशं मम ॥५५॥ चतुःपदा पातु ब्रह्म देवाद्या दक्षिणानना  
॥ षड्विंशतितत्वासा पातु मे दक्षिणां दिशं ॥५६॥ प्रत्यङ्मुखी

पंचपदिं पंचाशतित्वरूपिणी ॥ पातु प्रतीचीं मनिशं सामब्रह्म  
शिरोकिता ॥५७॥ सौम्यास्या ब्रह्मरूपाख्या सा सर्वंगी रसात्मिका ॥  
उदीच्या षट्पदा पातु चतुःषष्टिकलात्मि ॥५८॥ पंचाशद्वर्गं रवि  
तानवपादाशताक्षरी ॥ व्योमास्या पातु मे चोर्द्ध्वं शीर्षं वेदांतं संस्थि  
तां ॥५९॥ विद्युन्निभा ब्रह्मसध्यां मृगारूढा चतुर्भुजा ॥ चापेषु  
चर्मा सिधरा पातु मे पावकं दिशं ॥६०॥ ब्राह्मी कुमारी गायत्री र  
क्षाक्षी हंसवाहना ॥ विन्नत्कमंडलुरक्षस्त्रकस्तुवो पातु मे त्रै  
ती ॥६१॥ शुक्लवर्णा च सा वित्री युवती वृषवाहना ॥ कपालशु



लमक्षस्त्रकूधारिणीपातुवायवी॥६२॥श्यामासरस्वतीवृद्धा  
वैष्णवीगरुडोसना॥संस्वार्यज्वाभयकरापातुशैवीदिशामम  
॥६३॥चतुर्भुजावेदमातागौरांगीसिंहवाहना॥वराभया  
ज्वयुगलाभुजौपात्वधरांदिशं॥६४॥तत्तप्ताश्चस्थितास्व  
स्ववाहनायुधभूषणा॥स्वस्वदिक्षुस्थितापांतुग्रहपेत्यंगसं  
युता॥६५॥मंत्राधिदेवतारूपंरुद्राधिष्ठानदेवता॥व्यापकत्वे  
नपात्वस्मादापादतलमस्तकं॥६६॥तत्पदंमेशिरःपातुभा  
लंमेसवितुःपदं॥वरेण्यंमेदृशोपातुश्रुतिंभर्गःसहामम

॥६७॥आणदेवस्यमेपातुपातुधीमहिमेमुखं॥जिह्वाममधि  
यःपातुकंठंमेपातुयुःपदं॥६८॥नःपदंपातुमेस्कंधौभुजौ  
पातुप्रचोदयात्॥करोपातुमेरसःपातुवक्षोमेराजसीसदा॥  
६९॥असौमेहृदयंपातुमममध्यसदावतु॥उमानाभिंस  
दापातुजानुनीअमृतंमम॥७०॥जंघेब्रह्मपदंपातुगुल्फौ  
भूःपातुमेसदा॥पादौममभुवःपातुसुवःपात्वखिलंवपुः॥  
७१॥रामानिमेमहःपातुरोमकूपेषुमेजनः॥प्राणाश्च  
धातुतत्त्वानितदिशःपातुमेतपः॥७२॥सत्यंपातुममा



यं विहंसो बुद्धिं तु पातु मे ॥ अशुचि षः पातु मे विशां धन को  
शं वसुः सदा ॥ ७३ ॥ पातु तं रिक्षसं ज्ञानं हाता मे पातु धा  
तु जं ॥ अंग न वेदि षः पातु अतिथिः पातु मे गृहं ॥ ७४ ॥  
धर्मं दुरोषं एता तु नृप दर्थं च पातु मे ॥ वरसु त्यातु मे जा  
यां क्रतुं सत्यातु मे सुतान् ॥ ७५ ॥ व्योम सत्यातु मे बधून्  
तु न जांश्च पातु मे ॥ गो जाश्च मे पशून् पातु क्रतु जा पातु  
मे भुवः ॥ ७६ ॥ अद्रि जाः पातु मे द्रव्यं सर्वं स्व पातु मे क्र  
तुं ॥ वह्नि मा रत सो मा र्क पुरुषार्थः सदा मम ॥ ७७ ॥ अ

नुक्त मपि यस्या नं शरीरां तर्ब हि श्रयत ॥ तत्सर्वं पातु  
मे नित्यं हंसः सो ह महर्निशं ॥ ७८ ॥ इदं ते कथितं स  
म्यक् अस्या निब्रह्म पंकजं ॥ संध्ययो प्रत्यहं न तया जप  
काले विषे षतः ॥ ७९ ॥ धारये द्विज वर्यो यः आवयेद्वा  
समाहितः ॥ स शिवः सो हंस स म्राट् स विराट् स्वराट् ॥  
८० ॥ शताक्षरं महा देव्या न्ममाष्ट विंशतिः शतं ॥ शृणु वे  
क्षामि तत्सर्वं इति गुह्य सनातनं ॥ ८१ ॥ भूमि र्भुव  
ना वाणी वसुधा सुमना मही ॥ हरिणी जननी नंदा



सुविस्सर्ग तपस्विनी ॥८२॥ पयस्विनी सती त्पंगी वै  
दवी चिन्मयी समा ॥ विश्वातुर्या वरेण्या च निरुणी य  
मुनी भवा ॥८३॥ गोदा देवी वरिष्ठा च शांति निर्धिम  
तिर्हि मा ॥ धीषणा योगिनी योक्ती नदिप्रज्ञा तु चोदि  
नी ॥८४॥ दया च यामिनी पद्मारोहिणी रमणी जया ॥  
सेना मुखी साम मयी वकुला दोषवर्जिता ॥८५॥ माया  
प्राज्ञी प्रमादो ग्ध्री मानिनी शोषिणी क्रिया ॥ जोत्स्ना तीर्थ  
मयी रम्या सोमामृत्युजया तथा ॥८६॥ ब्राह्मी हैमी भू

जुगी वशिनी सुंदरी बनी ॥ ॐ कारहं सिनी सर्वा व  
र्तनी षड्रुणावती ॥८७॥ वंद्या सुधार मातन्वी रिपुघ्ना  
शुणिको सती ॥ हिम्नी तारा वेगवती वितित घ्नी षडा  
नना ॥८८॥ अमरा तीर्थदात्री च दुर्द्वेषारोग हारि  
णी ॥ नीतिसाष्टाप्रशंसघ्नी षड्देहावज्जिणी रणी ॥  
८९॥ ससैदे दिमला सत्वा सलिला विमला व्यया ॥  
योगिनी विमला सत्या अचिरा बलदा जया ॥९०॥  
गोमती जान्हवी रज्जीतपिनी जात वेदसी ॥ अचिरा व



15  
10  
ष्टिदाजायाकृतातत्रहतात्मिका ॥११॥ सर्वकामदुघासो  
माभवहंकारवर्जिता ॥ द्विपदायाचतुःपादात्रिपदाच  
षट्पदा ॥१२॥ अष्टापदिनवपदीसहस्राख्याक्षरात्मि  
का ॥ इदं परात्परं ब्रह्मसावित्रीमंत्रपंजरं ॥१३॥ नाम्ना  
ष्टविंशतिशतं स्मृत्युयाद्वावयेत्पूवेत् ॥ अमृतममृ  
तत्वायभीतानामभयायच ॥१४॥ मोक्षायचमुमुक्षुणां  
श्रीकामानां श्रियैसदा ॥ विजयाययुयुत्सूनां व्याधिता  
नामरोगकृत् ॥१५॥ वश्याचवश्यकामानां विद्यायैवेद

5  
वांछिनां ॥ इविणायदरिद्राणां पापिनां पापशान्तये  
॥१६॥ वादिनां वादविजयं कवीनां कविताप्रदं ॥ अन्न  
यस्तु धितानां च स्वर्गोपवर्गमिच्छतां ॥१७॥ पशुदंष्ट्र  
कामानां पुत्रदं पुत्रकांक्षिणां ॥ क्लेशिनां क्लेशनाशाय  
णां शत्रुक्षयायच ॥१८॥ राजावश्यायजपूर्यपंजरं  
नृपसैविनां ॥ भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णोः सर्वतरा  
त्मनः ॥१९॥ विनायकविसृष्टानां शान्तये भवति ध्रुवं ॥  
जप्यं त्रिवर्गसिद्ध्यर्थं गृहस्थस्य विशेषतः ॥१००॥ मु

5 10 15 20



निमिर्त्तानसिद्धीर्थं मोक्षाय परमाय च ॥ उद्यंतं चं  
डिकिरणमुपस्थाप्य कृतांजलि ॥ १०१ ॥ तुलसीकानने  
तिष्ठनासीनो वाजपेदिवं ॥ सर्वाङ्कामानवाप्नोति तथैव  
शिवसंनिधौ ॥ १०२ ॥ मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्तिप्रव  
र्द्धनं ॥ ज्वरार्तानां कुशाग्रेन मार्जयेत्कुष्ठितं तथा ॥ ३ ॥  
अङ्गमङ्गं यथा लिङ्गं कवचेन तु साधकः ॥ मण्डलेन वि  
ष्टुद्धेन सर्वरोगैर्न संशयः ॥ ४ ॥ मृतपूजा च यानारी  
जन्मवन्ध्या तथैव च ॥ काकवन्ध्या च नारीणां ॥ तासामं

गं प्रमार्जयेत् ॥ ५ ॥ पुत्रानरोगिणस्तान्तालभते दीर्घ  
जीविनः ॥ तान्तां संवत्सराद्वीकं गर्भं धर्तुं धरीपुनः  
॥ ६ ॥ पतिविद्वेषिणीयास्त्री अङ्गं तस्य प्रमार्जयेत् ॥ त  
मेव भजते सा स्त्री पतिं कामवशंगता ॥ ७ ॥ अश्वत्थे  
राजवश्यार्थं जले मग्नस्वरूपं भाक ॥ पालाशमू  
ले विद्यार्थं तेजसापि मुखे रवेः ॥ ८ ॥ कन्यार्थं चंडि  
का गेहे गदेश्चुक्षया च ॥ श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्यने  
स्त्रीवश्याय च ॥ ९ ॥ आरोग्यार्थं च गेहे च मोक्षार्थं शैले



मस्तके ॥ किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः ॥  
११० ॥ यं यं काममभिधायेत तं तं प्राप्नोत्यसंशयः ॥ ॥  
इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां चतुर्विंशतिसाहस्रि  
कायां वसिष्ठपराशरसंवादे सावित्रीपञ्जरविभा  
गयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्र  
श्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ एते गर्भगता ये न तस्मै  
श्रीगुरवे नमः ॥ श्री ॥ ~~.....~~ ॥ श्री ॥

श्रीगणपतिचरणजलजाभ्यां नमः ॥ प्रातः प्राची दिगं  
तोदयललितदन्तदूतलक्षं समंतात् प्रत्यक्षं देव  
मतर्बहिरपि जगतां यो धकारपहारी ॥ किं उच्यं  
यस्य विश्वभ्रमणविधिमन्त्रिन्दमुपादयंते तं ब्र  
ह्मांडप्रहीपंदशशतकिरणोद्दंडमार्तंडमीडे ॥  
१ ॥ यस्य प्राची मरीची प्रचयसमुदये स्ताचले च  
प्रयाणे ब्रह्मं द्रोपेन्द्रभास्वन्मणिमुकुटनिघण्टि

प्रेक्षादल्लयमभिधाय



ता

पंकेरुहश्रीः॥ विश्वाधीशोमहेशो जलमपि कुरु  
तेसोऽशुजालैः समग्रं प्रत्युग्रैरुग्रमूर्तिग्रहपतिर  
भितो विग्रहं नः सदा व्यात ॥२॥ कोटिबल्लोडभां  
डोद्भटघटनचमत्कारिचक्रं किमेतत् किं वा  
यंबल्लशक्तैर्मुकुरमभिनवानेतत्प्रंगारदृष्टे ॥  
व्यञ्जं किं वादिपुंसः किमपरिणतं तेजसा बल्लय  
तद्बुस्तान्नपुरस्तात् किमपि दिनमणेर्मंगलं मे

गलाय ॥३॥ ग्रस्तं बल्लोडकालप्रतिनिधिनिवि  
डध्वांतविध्वंसदृष्ट्या स्वस्थाः शंतोतिशताः श्रु  
तिविधिनिरतासत्कीयामारभंते ॥ सानंदं विश्व  
मतद्भवतियदुदयारंभसंभावनायां मैत्रास्त्रा  
णंतनोर्नोविदधतुनितरं भावनस्ते समस्ताः ॥  
४॥ ऐं ह्रीं मुद्योतयंतो घनतिमिरतरोर्मूरमून्मूल  
यंतः कृत्वा कोकान् विविकचकमलिनीकामनोमो



दमत्ताः॥ निघ्नंतो विघ्नदैत्यां स्त्रिजति सहजानं  
दमुपादयंतं कल्याणं नः क्रियासुः कलिकेलुह  
रास्तेकरास्तीप्रभानोः॥५॥ सारंगं गङ्गा त  
टघटितगुहास्ते मुनीन्द्रादिदेवाः दैत्या यामानवा  
स्तेत्यवितुरिति पदं यन्मनुं भावयंति॥ यद्वत्सु  
तिरत्नं स्त्रिजगति जगति ब्रह्मरूपेण नित्यं सत्यं त  
सौ सहस्रं भवतु मम मुदे सर्वदा सर्वदा यी॥ ६॥

जीवानां हंसनाम्ना निजकुलमीलनो तूसाहतः किं  
समंतादिश्वंप्रद्योतयंतः सकलस्समुजो हंसवंशा  
विहंगाः॥ तेजो बोधे स्तरंगा किमुत परमहः शानच  
कस्फुलिंगा भागंगा निर्झराः किमुतर विकरा श्री  
करालः करालः॥७॥ पूषादित्यार्कसूर्योदयनदिन  
करवधमार्तेडभास्वत्वंडाशुद्योतितद्योमिहिरति  
मिरहन्दाराश्चित्रभानु॥ भानुर्भूतेशमर्तर्भइति



चरवेर्यो जपत्य वृमेकं नामानीप्रीतिरित्यामदृगद  
विपदस्तद्वपुर्नस्पृशंति ॥८॥ तारं नामसमिंदुम  
स्तकममोकोत्कायविदिनमहेश्रीमह्यंतदिवाकरा  
यसहितस्तनोनुसूर्यस्वयं ॥ प्रांतेचोनुगतदृया  
दितिपदं वैराश्विवर्णो महाश्वेतायमनुरीरितो दिन  
मणेः सर्वमनंतर्गतं ॥९॥ दृष्टिः सूर्योदित्यातदनुह  
रिकांताससहजागजार्णस्तारः दिस्तरणिमनुराद्यो  
निगदितः ॥ जापाद्यस्यस्वामी हयगगनगामी दिनमणि

महासिद्धिंदतेवपुषिचवित्तेतिकुशलं ॥१०॥ तं जै  
शोमंचवेतागुरुचरणचमत्कारसंसारभारच्छेता  
क्षिप्रसादं क्षणमपिचमुनेर्योतियोर्जजयीति ॥  
सिंचत्यंगपतंगः करनिकरगलत्पुपयपीयूषधा  
रासारेस्तस्यापिवश्याविलसतिनितरं मंदिरस्थं  
दिरापि ॥११॥ येषातस्तरणेः पठंतिमनुजास्तोचं  
विचित्रं महामत्रोद्धारपवित्रमंचचभवांभोधौव



हि त्रं महत् ॥ तेषां वेश्म वि लो कने न धन दः स्या  
निर्धनो विद्यया वागीशोऽप्यसमसमीक्ष्य विभवं  
मुग्धो मराधीश्वरः ॥ १२ ॥ यथापि उद्यद्यपि सहस्र  
करस्य भूरिस्तोत्राणि संति मुनिभिः प्रतिपादिता  
नि ॥ उरी करोतः मम मंदमतेस्तथा कः स्तोत्रय  
था स्मरहरे कनकप्रसूनं ॥ १३ ॥ गायत्र्या कव  
चं चेदं द्विजानां मंत्रवर्द्धनं ॥ साधनं सर्वकामाना  
मिदं मंत्रं सदा जपेत् ॥ १४ ॥ नित्यं पठति यो धीमा

न स्नातः प्रातस्तदा शुचिः ॥ शुचौ देशे समासा  
द्यप्यग्नमष्टदले शुभे ॥ १५ ॥ पठेत्वा धारयेद्वा  
पितरस्य सिद्धिं करे स्थितः ॥ अंते मोक्षमवाप्नोति  
गायत्र्या पदमुत्तमं ॥ १६ ॥ विष्णोः सुलभतामोति  
द्विजत्वं जन्म जन्म नि ॥ ये तु श्रूयन्ति च ब्रह्म ध्याये  
न्मन्त्रं गुरुतत्पकः ॥ परद्वारी सुरापानी मुच्यते च  
रणत्रयां त ॥ १७ ॥ इति श्रीमंत्रसारे नारदकश्यप  
संवादे गायत्र्या स्तोत्रं समाप्तं ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥



श्रीगायत्रीदेव्यै नमः॥ प्रथमं सविता देवी द्वितीयं च  
त्रैलोक्येश्वरी तृतीयं ज्ञानरूपेण चतुर्थं लक्ष्म्युच्यते॥  
१॥ पंचमं सिद्धि मूली च षष्ठं च बोधरूपिणी॥ सप्त  
मं ही पकं नाम अष्टमं विज्ञयं तथा॥ २॥ औषधं न  
वमं नाम दशमं मुखशोधिनि॥ निर्गंधैकादशं  
नाम द्वादशं वैलोक्यता रिणी॥ ३॥ ये तानि द्वा  
दश नामा जपे नित्यं प्रयत्नो बुधैः॥ कोटियज्ञफलं  
नित्यं आनेदं लक्ष्युच्यते॥ ४॥ इति श्रीब्रह्मांड

पुराणे ब्रह्मनारदसंवादे श्रीगायत्रीद्वादशना  
मसमाप्तं॥ ॥ श्री॥ ॥ २॥ ॥ स्तु॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गायत्री जपविधिः ॥ ॥ केशव ॥  
माधव ॥ गोविंद ॥ इत्यादि ॥ पाणायामं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ भूः  
भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॥ परकः ॥ ॐ तत्स  
वितुं या रा परकः ॥ ॐ आपो ज्योतिरसो मृतं बुध्न भू भुवः स्वरो  
मरिचकः ॥ ॐ तत्सवितुर्विधि विधामि व ॥ ऋषिः शिर  
सि ॥ गायत्री छन्दः मुखे ॥ सविता देवता ॥ गायत्री जपे विनियोगः ॥  
ॐ तत्सवितुर्विधात्मने अंगुष्ठानमः ॥ ॐ वरेण्यं विश्वात्मने

तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां नमः ॥  
ॐ धीमहि सत्यात्मने अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धियो यो नः ता  
नात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात्सर्वात्मने करतल  
करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॥ ॐ तत्सवितुर्विधात्मने हृदयाय न  
मः ॥ ॐ वरेण्यं विश्वात्मने शिरसे स्वाहा ॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्रा  
शिरसायै त्मने ॥ ॐ धीमहि सत्यात्मने कवचाय हुम् ॥ ॐ  
धियो यो नः तानात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात्

शिरसायै  
वषट्



सर्वात्मने ~~सर्व~~ अस्वाय पद्मा ॥ ध्यानं ॥ ॥ मुक्तावि  
 द्रुमहेमनी भवलेखाये मुखे स्त्र्यक्षरौः युक्ता मिदुनि वद्ध  
 रत्न मुकुटांत त्वात्मवरात्मिका ॥ गायत्रीवरदा भयां कुशकशा  
 मुभ्रंकपालगदां शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तौ वै हस्तीभजे ॥  
 ॥ ॥ मानसोपचारैः संपूज्य ॥ मुद्राप्रदशयेत् ॥ ॥ सुमुखं संपुष्टं  
 चैति ॥ ॥ ~~अथ सप्तक निवृत्तिः ॥~~ ॥ अथ सप्तक निवृत्तिः ॥ ॐ भू  
 भुवः सुवः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धि

यो योनः प्रचोदयात् ॥ ॥ इति सप्तक निवृत्तिः ॥ अत्र मंत्रचेतन्या  
 दिपठेत् ॥ ॥ अथ गायत्री जपेत् ॥ जपेति वेद्यां मुद्राप्रदशयेत् ॥ पुनः षडं  
 सुरभिर्ज्ञानचक्रं च योनिः कूर्मोऽथ पंकजं ॥ लिंगनिर्वाणाम्  
 द्वाचजपांतेऽष्टौ प्रकीर्त्तिताः ॥ इति ॥ ॥ शापोद्धारं अष्टौ कृत्य  
 पश्चात् गायत्रीं विधिः ॥ ॥ अथ शापोद्धारं ॥ ॥ अस्मै श्री ब्र  
 ह्मशापविमोचनमंत्रस्य निगृह्णानुग्रहकर्त्ता प्रजापतिर्ऋषिः  
 ब्रह्मशापविमोचन गायत्री शक्तिदेवता । वाहुता गायत्री छन्दः

पुनः षडं  
 मन्त्रा



ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ सावित्री भजामहे  
सुमुखी विष्णु गभी ॥ यन्मुरवान्निःसृते रिविलयेदगभी ॥ गा  
यत्री ब्रह्मोपासितं रूपं ब्रह्मविदुस्तो पश्यंति धीराः सुमनसा  
वाचमक्रत ॥ ब्रह्मशापविमोचनादिमुक्तौ भवतु ॥  
इतीदं कवचं दिव्यं ~~ब्रह्मशापविमोचना~~ विलासैश्चर्यसिद्धिदम्

॥ श्री ० श ० ॥  
॥ २ ॥

स्थानेश्वरे  
भवातीतु  
विल्वके वि  
ल्वपत्रिका

श्रीगोप्यै नमः ॥ देवुवाच ॥ सर्वदा सर्वभूतेषु द्रष्टव्या सर्वतोभुवि ॥ सर्वलोर्वलोकेषु य  
त्किंचिद्रहितं नमया विना ॥ तथापि येषु स्थानेषु द्रष्टव्या सिद्धिमीप्सुभिः ॥ स्मर्तव्या भू  
तिका मेवा तानि वक्ष्यामि नन्वतः ॥ २ ॥ वाराणसी विशालाक्षी नैमिषे लिंगधरिणाम् ॥ प्रया  
गे ललिता देवी कार्मुका गंधमादने ॥ ३ ॥ मानसे कुमुदानाम विश्वकाया तथा म्वरे गोमते गोम  
ती नाम मन्दरे कामचारिणी ॥ ४ ॥ मदीकयचैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे ॥ कान्यकुब्जे तथा गौ  
रीरंभा मलयपर्वते ॥ ५ ॥ एकाम्रके कीर्तिमती विश्वाविम्बेश्वरे विदुः ॥ पुष्करे पुरहूते तिके  
दारे मार्गदायिनी ॥ ६ ॥ नन्दाहिमवतः पृथ्वे गोकर्णे रुद्रक रिकार् ॥ ७ ॥ श्रीशैले माववी नाम  
रुद्राक्षेश्वरे तथा ॥ जयावराहरोले तु कमला कमलालये ॥ ८ ॥ रुद्रकोष्ठा चतुर्दशी का  
ली कालंजरे गिरौ ॥ महालिंगे तु कपिलासंकेते मुकुटेश्वरी ॥ ९ ॥ तालग्रामे महादेवी

॥ श्री ४ ॥  
॥ १ ॥



॥ गो० श० ॥ शिवलिंगे जलप्रिया सायापूर्यो कुमारी तु संताते ललिता तथा ॥ १० ॥ उत्पलाक्षी सहस्राक्षे कम  
 लाक्षे महेश्वरी ॥ गयायो मंगला नाम विमला पुरुषोत्तमे ॥ ११ ॥ विपासायाममोघा च पादला पुराण  
 वर्द्धने नारायणी सुपाश्वे तु त्रिकूटे रुद्रसुन्दरी ॥ १२ ॥ विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले  
 कोटरी कोटितीर्थे तु सुगंधामागधेवने ॥ १३ ॥ कुआश्रये त्रिगंधातु गंगादारे रतिप्रिया ॥ शिवकुं  
 डे शुभा नन्दानन्दिनी देविका तटे ॥ १४ ॥ रुक्मिणी दारवत्सांतुराधा रुद्रावने वने ॥ देवकी म  
 पुरायांतु पाताले परमेश्वरी ॥ १५ ॥ चित्रकूटे तथा सीता विन्धे विन्ध्याधिवासिनी ॥ सत्ये  
 वेकवीराच हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका ॥ १६ ॥ रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती ॥ करवीरे म  
 हलक्ष्मी उमा देवी विनायके ॥ १७ ॥ आरोग्या वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी ॥ मृगये सु  
 स्मतीर्थे तु मृगता विन्ध्यकन्दरी ॥ १८ ॥ मारावे मारावती नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे ॥ कगला

श्री ४  
 २

॥ गो० श० ॥ प्रचंडा तु चंडिका मरकटके ॥ १९ ॥ सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती ॥ देवमाता सरस्व  
 त्यां पारवार तटे मता ॥ २० ॥ महालये महाभागाय यो ह्यं पिंगलेश्वरी ॥ सिंहिका कृतशोके तु का  
 र्तिके वैवशां करी ॥ २१ ॥ उत्पला वर्तके लीला सुभद्रा शोणा संगमे ॥ माता सिद्धपुरे लक्ष्मी लवंगा  
 भरताश्रमे ॥ २२ ॥ जालंधरे विश्वसुखी तारा किष्किन्धपर्वते ॥ देवदाहवने पुष्टिर्मेधाका  
 स्मीरमंडले ॥ २३ ॥ भीमा देवी हिमाशे तु तुष्टिर्वक्त्रेश्वरे तथा ॥ कपालमोवने शुद्धिर्माता प्रा  
 यावरोहणे ॥ २४ ॥ शंखोदारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिंडाकरे तथा ॥ कलानुचक्रभागायामच  
 दे शिवकारिणी ॥ २५ ॥ वैराग्या ममृतं नाम वदयामुर्वशी तथा ॥ श्रेष्ठधीवोत्तरे कलेकु  
 शदीपे कुशोदका ॥ २६ ॥ तन्मया हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी ॥ अश्वत्थे वादिनी सा  
 तु निधिर्वैश्रवणा लये ॥ २७ ॥ गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसन्निधौ ॥ देवलोके तथे नृ

श्री ४  
 ३



राणीवृक्षास्येष्टसूरस्यती २८ सूर्यविजये प्रभानाममातृराणां वैष्णवी मता अरुन्धती सती नानु  
 रामा सुवर्तिलोत्तमा २९ चित्रे बुधकलानामशक्तिः सर्वशरीरिराणं एतदुद्देशतः  
 प्रोक्तं नामाष्टशतमुत्तमम् ३० अष्टोत्तरं च तीर्थानां ज्ञातमेतदुदाहृतं यः स्मरेत्  
 गुणाद्यापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ३१ एषु तीर्थेषु यः कृत्वा स्नानं पश्यति मां नरः स  
 र्वपापविनुर्मुक्तः कल्पं शिवपुरे वसेत् ३२ पञ्चमत्सरमं कालं कुर्यात्तेषु  
 मानवः समित्वा बुधसदनं यद्दमभ्येति शंकरम् ३३ मन्नामाष्टशतं मत्सु श्रावये  
 द्धिवसन्निधौ तृतीयायामथाष्टम्यां बहु पुत्रो भवेन्नरः ३४ गीदाने श्राव  
 दाने वा अह्न्यहनि वा पुनः देवार्चनविधौ विद्वान्पठन् ब्रह्माधिगच्छति ३५ एवं वदन्ती सा तं  
 त्रददाह त्मानमात्मना स्वायं भवोपि कालेन दक्षः प्राचेतसो भवत् ३६ पार्वती च भवेद्देवी शि

कार्यं ५

शिवदेहार्द्धधारिणी मेनागर्भसमुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ३७ अरुन्धती जपि  
 त्वे तत्प्राययोगमनुत्तमम् ३८ गुरुवाञ्छराजर्षिलोके विज्ञापिता मगात् ३९ ययातिः  
 पुत्रलाभं च धनलाभं च भार्गवं तथा न्यदेवदेत्याश्च ब्राह्मणाः शत्रियास्तथा ४० वैष्णव  
 आश्रम्य बहवः सिद्धिर्मायुर्यथोप्पि तम् यत्रैतद्विरचितं तिष्ठेत् पूज्यते देवसन्निधौ  
 ४० न तत्र शोकदौ शत्यं कदापि दापि जायते इति श्रीमत्स्यपराणोगोयीः शत  
 नामम् संपूरामि शुभम्